

डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा जानना, सत्र 4a, पुराने नियम में ईश्वर की इच्छा, भाग 1

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

ईश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबिल धर्मशास्त्र पर हमारे व्याख्यान में आपका स्वागत है। इस व्याख्यान में, हम पुराने नियम के बारे में बात करने जा रहे हैं। यह जी.एम. 4 है। जी.एम. 4. आपके पास अपनी स्लाइड्स होनी चाहिए, और इस विशेष व्याख्यान के लिए कुछ नोट्स भी हैं, इसलिए आप उन्हें उपलब्ध करा सकते हैं।

इससे यह आपके लिए और भी मजेदार हो जाएगा। मैं बस कुछ बातें बताना चाहता हूँ। पहली बात, किसी ने मुझे बताया कि कुछ स्थितियों में बड़े अक्षरों का इस्तेमाल किसी पर चिल्लाने के समान माना जाता है।

मुझे लगता है कि आप समझ गए होंगे कि मैं बड़े अक्षरों का इस्तेमाल कर रहा हूँ ताकि आप स्लाइड को बेहतर तरीके से देख सकें और स्पष्टता प्राप्त कर सकें। कभी-कभी, मैं उन्हें ज़ोर देने के लिए इस्तेमाल करता हूँ, इसलिए बस इसे साइड में उल्लेख करें ताकि अगर किसी ने इस पर विचार किया हो। तो, अब तक, हमने एक ओरिएंटेशन किया है।

हमने मेरे मॉडल के अवलोकन के बारे में बात की है। हमने बाइबल के संस्करणों के बारे में बात की है। हमने बाइबल हमें तीन तरह से सिखाती है, इस बारे में बात की है।

हमने चर्च द्वारा ऐतिहासिक रूप से इस प्रश्न के बारे में उठाए गए कदमों के बारे में बात की है। अब, हम आज पुराने नियम और अगले व्याख्यान में नए नियम के बारे में बात करने जा रहे हैं। ये कई मायनों में सबसे मजेदार व्याख्यान हैं क्योंकि हम परमेश्वर की इच्छा जानने के इस प्रश्न के पाठ में विकास देख रहे हैं।

और यही वह बात है जो दिन के अंत में वास्तव में महत्वपूर्ण है। इसलिए, यदि आप चाहें, तो अपनी सीट बेल्ट बांध लें, और हम जाने के लिए तैयार हो जाएँगे। ठीक है, सबसे पहले, पुराने नियम के पहलुओं का मूल्यांकन करते हैं।

कुछ निश्चित श्रेणियाँ हैं जिन पर हम चर्चा करेंगे। यहाँ हमारे पास उनमें से छह हैं, पाँच वास्तव में निष्कर्ष में हैं। हम परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए पुराने नियम के पैटर्न और यह कैसे प्रस्तुत करता है, के बारे में बात करने जा रहे हैं।

हम पुराने नियम के नामकरण के बारे में बात करने जा रहे हैं जिसका उपयोग परमेश्वर की इच्छा के लिए किया जाता है। हम पुराने और नए के बीच अंतर देखेंगे, अर्थ के संदर्भ में नहीं, बल्कि सिर्फ भाषाई संरचनाओं के संदर्भ में। हम दानियेल के जीवन के बारे में थोड़ी बात करेंगे और इसे परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के उदाहरण के रूप में इस्तेमाल करेंगे।

हम कुछ दुर्व्यवहार के उदाहरणों के बारे में बात करेंगे जो चर्चों में कई बार हुए हैं। मैंने अपने शुरुआती ईसाई जीवन में उन्हें बहुत सुना है। वे दुर्व्यवहार के उदाहरण हैं जिन्हें मैं बाइबल को समझने के बजाय बाइबल को नैतिकतापूर्ण बनाना कहता हूँ।

फिर, हम बुद्धि के बारे में बात करेंगे। परमेश्वर की इच्छा में बुद्धि एक महत्वपूर्ण कारक है, और हम यह स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे कि इसका क्या अर्थ है, और फिर हम आगे बढ़ते हुए इसे एक साथ लाएंगे। सबसे पहले, परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए पुराने नियम के पैटर्न।

जाहिर है, प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन उन पैटर्न का एक प्रमुख हिस्सा है। मैंने आपको जो पूरक पुस्तिका दी है, जिसमें बहुत सारी जानकारी है लेकिन मैं अक्सर उसका उल्लेख नहीं करूंगा, उसमें हमारे पास पूर्व-मोज़ेक काल के रूप में जाना जाने वाला काल है। यदि आप उस पुस्तिका के पृष्ठ एक को देखें, तो आप देखेंगे कि हमने यहाँ उन चीजों को सूचीबद्ध किया है जो मूसा के समय से पहले रहस्योद्घाटन के संदर्भ में घटित हो रही थीं, जिन्हें हम शास्त्र को संहिताबद्ध करने वाले पहले व्यक्ति होने का श्रेय देते हैं।

अय्यूब की पुस्तक एक तरह से अनोखी पुस्तक है। हम वास्तव में इसकी तिथि के बारे में निश्चित नहीं हैं, लेकिन फिर भी, हमारे पास आदम और हव्वा हैं। परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कैसे संवाद किया? खैर, उन्होंने यह बगीचे में किया।

उसने उन्हें मौखिक रूप से यह बताया। उसने उन्हें शर्तें दीं। मुख्य शर्त, जैसा कि आप अच्छी तरह जानते हैं, यह है कि इस पेड़ का फल मत खाओ क्योंकि यह ज्ञान का पेड़ है, और यदि आप इसे खाते हैं, तो इसका मतलब है कि आप सोचते हैं कि आप मेरे जैसे बनना चाहते हैं।

और आप जानते हैं कि पतझड़ में बगीचे में आदम और हव्वा की कहानी क्या है। फिर हमारे पास बाइबिल की कहानी में नूह की कहानी है जो बाढ़ के संदर्भ में काफी बड़ी हो जाती है, और फिर उसके काफी समय बाद, हमारे पास अब्राहम है, जो बेबीलोन की तरह के किनारे पर प्राचीन निकट पूर्व से आता है, जिसे कसदियों का उर कहा जाता है, संभवतः उस क्षेत्र के उत्तरी भाग में जहाँ टिगरिस और फ़रात नदियाँ थीं। वह ईश्वर के बुलावे पर कनान की भूमि पर आता है।

एक आश्चर्यजनक बात। अब्राहम बाइबल नहीं उठा सकता था या उसे पढ़ नहीं सकता था। उसे सीधे परमेश्वर के दृष्टिकोण से जाना था जो उससे सीधे बात कर रहा था, और ऐसा हर दिन नहीं होता था।

कभी-कभी, अब्राहम से परमेश्वर के भाषण के बीच दशकों का अंतराल होता था, और हम अब्राहमिक कथा को देखते हैं और देखते हैं कि यह कैसे अंतराल पर है। और फिर हमारे पास लूत है। लूत एक आकर्षक चरित्र है जिसे हम थोड़ा विस्तार से देखेंगे क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के नकारात्मक पक्ष को दर्शाता है।

उस समय में मेल्कीसेदेक एक दिलचस्प व्यक्ति था जो सच्चे परमेश्वर को जानता था, फिर भी हमें उसके बारे में बहुत ज़्यादा जानकारी नहीं है। लोगों ने मेल्कीसेदेक के साथ हर तरह की हरकतें करने की कोशिश की, लेकिन सच्चाई यह है कि वह एक राजा के रूप में और सच्चे परमेश्वर का

अनुसरण करने वाले व्यक्ति के रूप में सामने आता है, और फिर भी हमें उस मुद्दे के बारे में कोई जानकारी नहीं है। बालाम भी एक रहस्य की तरह है।

वह उत्तर दिशा से आता है, जहाँ से अब्राहम आया था, और ऐसा लगता है कि वह काफी कुछ जानता है। और फिर भी, सबसे पहले, हमारे पास अभी तक कोई लिखित शास्त्र नहीं है, इसलिए वह मौखिक परंपरा और जो भी अनुभव हुआ, उससे आगे बढ़ रहा था। प्राचीन दुनिया में परमेश्वर के संचार में कुछ ऐसा हुआ था जिसके बारे में हमें कोई जानकारी नहीं है।

लेकिन वह प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन का काल था, परमेश्वर ने चुने हुए व्यक्तियों से बात की, किसी से नहीं। यह परमेश्वर का मांग पर दिया गया भाषण नहीं था, बल्कि यह इतिहास का संचालन था, और यह लंबे समय तक हुआ। हम आदम और हव्वा और नूह का सही समय नहीं जानते, लेकिन हम जानते हैं कि अब्राहम लगभग 2000 ईसा पूर्व, सामान्य युग से पहले या ईसा से पहले था, और इसलिए हमारे पास यहाँ बहुत सारे समय अंतराल हैं।

ठीक है, तो हमारे पास प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन है, खास तौर पर मूसा के समय से पहले के समय में, लेकिन यह अलग-अलग तरीकों से जारी है, जैसा कि मैंने पहले ही बताया है। ठीक है, हमारे पास प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन है, जिसे हम धर्मग्रंथ कहते हैं, और इस संबंध में मूसा को प्राथमिक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हम जानते हैं कि मूसा ने पेंटाटेच, उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, संख्या और व्यवस्थाविवरण लिखा था।

उन्होंने व्यवस्थाविवरण का अंत नहीं लिखा; संभवतः यह काम जोशुआ ने किया था क्योंकि मूसा का निधन हो चुका था। और हमारे पास भविष्यवक्ता हैं, और बेशक, बाइबल में, और विशेष रूप से हिब्रू बाइबल में, जिसे कानून कहा जाता है, बाइबल की पहली पाँच पुस्तकें और भविष्यवक्ता हैं। इसलिए, परमेश्वर चुनिंदा व्यक्तियों के माध्यम से प्रकट करता है, किसी भी व्यक्ति के माध्यम से नहीं।

दूसरे शब्दों में, आप रेगिस्तान में जाकर प्रार्थना नहीं कर सकते थे, और परमेश्वर आपको कुछ बता देता था। शास्त्रों में कभी भी यह उदाहरण नहीं दिया गया कि चीजें कैसे काम करती हैं। उन्होंने चुने हुए व्यक्तियों के माध्यम से संवाद किया जो उस छुटकारे के इतिहास का एक प्रमुख हिस्सा थे जो विकसित हो रहा था।

ठीक है, इसके अलावा, सहायक उत्पाद भी है। सहायक का मतलब है कि यह साथ-साथ आता है, और हम इसे मूल्य जमा कहते हैं। मैंने अवलोकन में उल्लेख किया है कि जैसे-जैसे समय बीतता है, भगवान के उद्धारक कार्य की प्रगति में, कुछ व्यक्ति कथात्मक उदाहरण बन जाते हैं, अच्छे और बुरे।

और बाकी विश्वासी समुदाय, अपने शिक्षकों के माध्यम से, उनके बारे में जानेंगे, और मूल्य विकसित होंगे, विश्वदृष्टि विकसित होगी, जिससे, निश्चित रूप से, मूल्य आते हैं। उस मौखिक और संहिताबद्ध प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन में, हमारे पास मूल्य जमा है। हम लूत की कथा के बारे में बात कर रहे हैं, और ज्ञान साहित्य उस विकास का एक बड़ा हिस्सा है।

ठीक है, तो इसके अलावा, परमेश्वर की इच्छा के लिए पुराने नियम के पैटर्न प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन हैं। हमने उन पूरक नोटों के बारे में थोड़ी बात की, और आप उन्हें अपनी प्लेटों के रूप में देख सकते हैं। अब, मूसा ने मौखिक पूर्व-मोज़ेक छुटकारे के इतिहास को संहिताबद्ध किया।

हमें यह नहीं बताया गया कि उसे यह सारी जानकारी कैसे मिली। यह मौखिक रूप से ही आनी चाहिए थी। कुछ बातें मूसा को सीधे तौर पर दी गई होंगी, लेकिन दस आज्ञाओं के अलावा हमारे पास इसके बारे में कोई और विवरण नहीं है।

जब मूसा ने ये बातें लिखीं, और फिर व्यवस्थाविवरण की किताब में, व्यवस्थाविवरण का मतलब दूसरा नियम है। व्यवस्थाविवरण एक ग्रीक शब्द है। उन्हें वास्तव में व्यवस्थाविवरण नाम सेप्टुआजेंट से मिला है, और वह दूसरा नियम है।

और मूसा ने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में परमेश्वर के बारे में प्राप्त कानून और रहस्योद्घाटन का प्रचार किया। यह देखना एक दिलचस्प अध्ययन है कि उसने किन मूल अंशों को संहिताबद्ध किया और कैसे उसने उन्हें दोहराया और उनका विस्तार किया। और यह हमें इस बात का एक पैटर्न देता है कि हम बाइबल को कैसे लेते हैं और इसके निहितार्थ कैसे समझते हैं।

मूसा हमें उस प्रक्रिया के कुछ उदाहरण देता है। इसलिए, वह इस सामग्री को संहिताबद्ध करता है। यह अब्राहम से पहले की सामग्री है।

यह अब्राहम की सामग्री है। बेशक, उसके पास मल्कीसेदेक और बालाम, कुलपिता हैं। कुलपिताओं की पूरी कहानी यहाँ मूसा द्वारा दर्ज की गई है। और इसलिए हम देखते हैं कि हमें सभी प्रकार के स्रोतों से जानकारी मिल रही है, लेकिन मुख्य रूप से मौखिक परंपरा से।

और प्राचीन दुनिया में, मौखिकता सूचना को आगे बढ़ाने में एक बहुत ही स्थिर कारक थी। यह आज काम नहीं करता है। हम सभी ने ऐसे खेल खेले हैं जहाँ आप किसी को कुछ बताते हैं, वे अगले व्यक्ति को बताते हैं, और देखते हैं कि जब आप 10 या 15 लोगों के साथ पार्टी लाइन के अंत तक पहुँचते हैं तो आपको क्या मिलता है।

और यह उस बात को नहीं दर्शाता जो पहले व्यक्ति को बताई गई थी। यह प्राचीन दुनिया नहीं है। मौखिक काल में इसके प्रसारण के मामले में प्राचीन दुनिया बहुत स्थिर थी।

अब, मूसा आता है, टोरा में सिनाई, यह लिखित शास्त्र है। मेरे पास यहाँ बहुत सारा पाठ है। हम कुछ पाठ देखेंगे, लेकिन हम इसे ज़्यादा नहीं करेंगे क्योंकि अगर हम ऐसा करेंगे तो यह बाइबल अभ्यास बन जाएगा।

आप जानते हैं, इनमें से कुछ पाठ व्यवस्थाविवरण के आरंभिक भाग में हैं, जहाँ मूसा कानून और परमेश्वर द्वारा उस कानून के संचार के बारे में बात करता है। जोशुआ ने अध्याय एक, श्लोक सात और आठ में इसे दोहराया है। हमारे साथ-साथ पाठों में, जब मैं केवल शास्त्रों का हवाला देता हूँ, तो मैं आपसे वीडियो को रोकने, उन पाठों को पढ़ने और यह देखने के लिए कह रहा हूँ कि वे मेरे द्वारा बताए गए बिंदु से कैसे संबंधित हैं।

अगर मैं आपको ये सब पढ़कर सुनाऊँ, तो बाइबल अभ्यास के अलावा, हम हमेशा सामग्री को पूरा करने में सक्षम होंगे। इसलिए, मुझे आपसे इसकी जिम्मेदारी लेने के लिए कहना है। मैं कुछ प्रमुख पाठों का हवाला दूँगा और उन्हें पढ़ूँगा।

वे सभी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि मैं आपको केवल एक नमूना दे रहा हूँ। वास्तविक पूरक नोट्स इसे और अधिक विस्तार से बताएंगे, और यह आपकी शिक्षा के लिए है। मूसा के बाद।

परमेश्वर ने खुद को कई प्रतिनिधियों के सामने प्रकट किया। मूसा के बाद के इस युग में, हमारे पास पुजारी हैं जो जानकारी के लिए परमेश्वर के माध्यम बन गए हैं। हमारे पास न्यायाधीश हैं।

पुजारी कई तरह से असफल हो रहे थे। न्यायाधीश आए। हमारे पास न्यायाधीशों की पुस्तक के अलावा इस बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है।

लेकिन हम देखते हैं कि परमेश्वर किस तरह से मुक्तिदायी इतिहास को आगे बढ़ा रहा है। और न्यायधीशों के काल में, वह केवल कुछ चुनिंदा व्यक्तियों से ही निपटता है। यह लोगों के लिए खुला दर्शक कक्ष नहीं है जहाँ वे कह सकें, परमेश्वर, आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं? वे अभी भी अपने द्वारा जमा किए गए मूल्यों और रहस्योद्घाटन के आधार पर काम कर रहे थे।

एलिय्याह और एलीशा जैसे गैर-लिखित भविष्यद्वक्ता भी हैं। ऐसे लिखित भविष्यद्वक्ता भी हैं जिन्हें आप अच्छी तरह जानते हैं। हमारे पास ऐसे लोग हैं जिन्हें हम प्रमुख और छोटे भविष्यद्वक्ता कहते हैं।

इसका मतलब सिर्फ़ लंबी किताबें और छोटी किताबें हैं। छोटे भविष्यद्वक्ताओं को 12 छोटे भविष्यद्वक्ताओं के रूप में संदर्भित किया जाता है। ठीक है, और ये प्रमुख व्यक्ति।

इसलिए, जैसा कि हम पुराने नियम में बाइबिल की कथा को विकसित होते हुए देखते हैं, परमेश्वर प्रतिनिधियों के माध्यम से अपनी इच्छा का संचार करता है। यह सामान्य नहीं है। यह एक खुला श्रोता कक्ष नहीं है।

यह केवल मुख्य व्यक्ति हैं जो उद्धार प्राप्त समुदाय को परमेश्वर की इच्छा, परमेश्वर की जानकारी और परमेश्वर की शिक्षा देते हैं। ध्यान दें कि रहस्योद्घाटन के पैटर्न परमेश्वर के विवेक से हैं, विश्वासियों के आग्रह से नहीं। अब हमारी स्लाइड के नीचे इसे फिर से देखें।

रहस्योद्घाटन के पैटर्न ईश्वर के विवेक से होते हैं, विश्वासियों की याचना से नहीं। जब हम नए नियम में प्रवेश करेंगे तो हमें इस पर विचार करना होगा क्योंकि मुझे लगता है कि चर्च में, हमने याचना के आधार पर जानकारी तक अपनी पहुँच को कम कर दिया है। ईश्वर मुझे यह बताने जा रहा है।

भगवान मुझे यह बताएंगे। और मैं यह कहना चाहूँगा कि शायद यह पैटर्न नहीं है, शायद नहीं, लेकिन यह वह पैटर्न नहीं है जो बाइबल हमें प्रस्तुत करती है। ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं।

परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए पुराने नियम के पैटर्न, मूल्य जमा। आइए देखें कि क्या यह अभी भी काम करता है। ठीक है, मूल्य जमा है।

मैं आपको इसके बारे में बताता हूँ। अब्राहम लूत को कसदियों के वर्ष से कनान देश में अपने साथ ले गया। और लूत उसका भतीजा था।

अब्राहम हर तरह से उसका गुरु बन गया। लूत हमेशा उसके साथ था। जब अब्राहम असफल हुआ, तो लूत ने उस असफलता को देखा।

जब अब्राहम ने वह जानकारी दी जो परमेश्वर ने उसे दी थी, तो लूत ने उसे सुना। कैम्पफ़ायर के आस-पास, जब अब्राहम ने परमेश्वर द्वारा दिए गए संदेश को साझा किया, तो यह मौखिक रूप से प्रसारित हुआ और उसी तरह आगे बढ़ता रहा। लूत के पास उच्च स्तर का विशेषाधिकार था जहाँ परमेश्वर का कार्य अब्राहम के व्यक्तित्व में केंद्रित था।

उसने अच्छे और बुरे मूल्यों को सीखा। जब अब्राहम सारा के बारे में झूठ बोलता है, तो लूत वहाँ होता है। उसने यह देखा।

इसका लूत पर क्या प्रभाव पड़ा? बाइबल हमें नहीं बताती। और फिर भी, उसी समय, हम लूत के कुछ पैटर्न को बाद में देखते हैं कि शायद वह उन चीजों को करने में चूक कर रहा था जो उचित नहीं थीं, क्योंकि अब्राहम ने समय-समय पर ऐसा करते देखा था, हालांकि मुझे यकीन है कि अब्राहम ने यह स्पष्ट रूप से बता दिया होगा कि वह उस विशेष बिंदु पर विफल रहा। लूत, वह भूमि जिसे वह बंटवारे के समय चाहता था, अब्राहम मिस्र में हुए प्रकरण से काफी परिपक्व हो चुका था।

और उसने लूत से कहा, तुम जो चाहो ले लो। मैं जो बचा है उसे ले लूंगा। अब, यह लापरवाही थी क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम को एक निश्चित बिंदु पर, फिलिस्तीन में एक निश्चित स्थान पर बुलाया था। और मैं उस शब्द को पढ़ रहा हूँ जिसका उपयोग हम अब कनान में करते हैं।

और उसे लूत को यह विकल्प नहीं देना चाहिए था। लेकिन जब लूत ने अपना चुनाव किया, तो उसने यह इसलिए नहीं किया क्योंकि उसे पता था कि यह वह देश है जिसके लिए परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया था। उसने अपना चुनाव दूसरे आधार पर किया क्योंकि नीचे जहाँ सदोम और अमोरा थे, और इतिहास में उस समय भी, वे बाइबिल की परिभाषाओं के अनुसार, पाप के शहर, अपव्ययी शहरों के रूप में जाने जाते थे।

और लूत वहाँ जाना चाहता था क्योंकि वहाँ उसके मवेशियों के लिए ज़्यादा घास थी। मैं इसे इस तरह से कह सकता हूँ। लूत अपने मवेशियों के लिए चुनाव कर रहा था, अपने बच्चों के लिए नहीं।

और जब आप लूत की कहानी पढ़ेंगे, खास तौर पर उत्पत्ति और फिर लेवितिकस में, तो आपको पता चलेगा कि लूत ने कुछ गलत चुनाव किए थे। उसकी जीवनशैली में लूत का सदोम और अमोरा के शहरों में जाना शामिल है। वह प्राचीन निकट पूर्व में गेट पर बैठा था।

गेट पर बैठना एक अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ है कि वह नगर परिषद में था। वह एक न्यायाधीश था, जैसा कि यह था। तो वह यहाँ था। वह अब्राहम के माध्यम से सच्चे परमेश्वर को जानता था।

और वह एक ऐसी परिषद में बैठा था जो सांसारिक आधार पर निर्णय दे रही थी। दूसरे शब्दों में, एक गलत विश्वदृष्टि। लूट को यह पता था, लेकिन अगर वह प्रतिष्ठा पाना चाहता था तो उसे इसके साथ चलना पड़ा।

और इसलिए हम बाद में देखेंगे कि पतरस में, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि लूट पूरी तरह से उथल-पुथल में था। एक विश्वदृष्टि के परिणामस्वरूप उसके जीवन में बहुत तनाव था जो सदोम और अमोरा के विश्वदृष्टिकोण से टकरा रहा था। 2 पतरस 2, आयत 6 और 8 में, मैं यहाँ एक बाइबल को पलटकर वापस लाने जा रहा हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप एक पल के लिए मेरे साथ इस पाठ को देखें।

2 पतरस 2, श्लोक 6 और 8. यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण पाठ बन जाता है, और अगर मैं अपने पत्रों को पलट सकता हूँ, तो कभी-कभी यह आश्चर्यजनक होता है कि न्यू टेस्टामेंट की किताबें कितनी छोटी हैं। ठीक है, 2 पतरस 2, श्लोक 6 से 8. और सदोम और अमोरा के शहरों को राख में बदल दिया, उन्हें उखाड़ फेंका, उन्हें उन लोगों के लिए एक उदाहरण बना दिया जो अधर्मी जीवन जीना चाहते हैं। खैर, आप अधर्मी का न्याय कैसे करते हैं? विश्वदृष्टि और मूल्यों के आधार पर।

और उसने उद्धार किया, अब इस वचन को ध्यान से देखिए, धर्मी लूट। क्या? धर्मी लूट? वह व्यक्ति जिसने अब्राहम को छोड़ दिया और उस पापी शहर में चला गया, वह व्यक्ति जिसने उसकी बेटी के साथ अनाचार किया, और मोआब और अम्मोन के बच्चे पैदा हुए। उसकी पत्नी नमक बन गई क्योंकि वह ईश्वर में विश्वास नहीं करती थी।

और उसने पीछे मुड़कर देखा और अपने मूल्यों में, उस शहर को भगवान के न्याय से ज़्यादा महत्व दिया। यह सदोम और अमोरा के विनाश पर एक जिज्ञासा शिखर नहीं था, लेकिन यह एक गहन नज़र और क्रोध था क्योंकि वह जो कुछ भी प्यार करती थी वह भगवान के बजाय वहाँ थी। यह सोचने की गलती न करें कि यह एक जिज्ञासा शिखर था।

और धर्मी लूट को, जो दुष्टों के कामुक जीवन से बहुत दुखी था, छुड़ाया, क्योंकि वह धर्मी मनुष्य उनके बीच में रहता था और देखकर और सुनकर दुखी था। यदि आप इसका पता लगाना चाहते हैं, तो आप शब्द संकट और शब्द परेशान की जाँच करें। मैं दृष्टांत का उपयोग करना पसंद करता हूँ।

मैं इसे एक सेकंड में आपको दे दूंगा। मैं कुछ और नहीं कहूंगा। उनकी धार्मिक आत्मा दिन-प्रतिदिन उनके अधर्मी कर्मों के साथ।

यहाँ धर्मी शब्द का कितनी बार प्रयोग किया गया? दोहराव अर्थ की कुंजी है। हम यह नहीं मानेंगे कि लूट एक आस्तिक था यदि यह पाठ न होता क्योंकि पुराना नियम उसे इस तरह से प्रस्तुत

करता है कि उसने गलत दिशा के साथ गलत चुनाव किए। और फिर भी नया नियम उसे धर्मी होने का श्रेय देता है, जिसका अर्थ है कि वह एक ऐसा व्यक्ति था जो परमेश्वर को जानता था, भले ही उसने वैसा ही व्यवहार किया हो।

और वह अपनी आत्मा में परेशान था। उन दो शब्दों ने मुझे व्यथित और परेशान कर दिया। मैं माफिया नियंत्रण के तहत एक न्यायाधीश के रूप में उसका उदाहरण देना पसंद करता हूँ।

वह वह नहीं कह सकता था जो वह मानता था। वह वह नहीं कह सकता था जो वह सोचता था। उसे वह कहना था जो वे सुनना चाहते थे।

और इसलिए यहाँ लूट है। उसके चुनाव भयानक थे, और परिणामस्वरूप उसका विकास कम हो गया। लेकिन मूल्यों के भंडार, समान ज्ञान, मूल्यों में, हम सभी ईसाई के रूप में समतल जमीन पर हैं क्योंकि हमारे पास ईश्वर का ज्ञान है।

हम अपने मूल्यों का विकास करते हैं। हमारी इच्छाशक्ति ही चुनाव करती है। और यहीं से हमारा नैतिक विकास होता है।

क्या हम अच्छी दिशा में विकास करते हैं? ऊपर की ओर। क्या हम बुरी दिशा में विकास करते हैं? नीचे की ओर। लेकिन यह सारा विकास ज्ञान पर आधारित है।

लेकिन हमारी इच्छाशक्ति ही वह है जो हमारे द्वारा अपने ज्ञान के आधार पर चुने गए विकल्पों से संबंधित है। परमेश्वर की इच्छा पूरी करना उस संबंध में पवित्रशास्त्र द्वारा बताए गए मार्ग के अनुसार अच्छे विकल्प बनाना है। इसलिए हम यहाँ मूल्यों को जमा होते हुए देखते हैं।

मुझे उस स्लाइड से पहले वाली स्लाइड पर वापस जाना है। हम वहाँ जाते हैं। ठीक है।

इसके अलावा, हमें लूट का जीवन मिला, और हमारे पास मूल्य जमा में व्यवस्थाविवरण 6, 1 से 9 भी है। यहाँ फिर से, क्योंकि ये बहुत महत्वपूर्ण हैं और वे शायद आपके लिए उतने परिचित नहीं हैं जिस तरह से मैं इसे आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ, मेरे लिए यहाँ जाकर इनमें से कुछ पाठ पढ़ना अच्छा है। व्यवस्थाविवरण 6, 1 से 9। बस सुनो।

अब ये आज्ञाएँ, विधियाँ और नियम हैं जिन्हें यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें सिखाने की आज्ञा दी है ताकि तुम क्या कर सको? उनका पालन करो। इसे देखो। और हम इसे नए नियम में देखेंगे।

चाहे तुम उस देश पर अधिकार करने के लिए जाओ, फिर भी तुम उन कामों को उस देश में करो। ताकि तुम अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते हुए उसकी सारी विधियों और आज्ञाओं का पालन करो, जो मैं तुम्हें सुनाता हूँ। और यह बात तीसरी आयत में भी कही गई है।

इसलिए हे इस्राएल, सुनो और करो, करो, करो, मत खोजो, खोजो, खोजो। परमेश्वर के लोगों को दिया गया आदेश परमेश्वर की इच्छा को खोजना नहीं था, बल्कि उन्हें दिए गए रहस्योद्घाटन से परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना था। मेरा मतलब है, इस पर ग्रंथ बहुत बड़े हैं।

और जैसा कि मैंने कहा, हम इन ग्रंथों की व्याख्या करके छह या सात व्याख्यान ले सकते हैं जो हमें बताते हैं कि कैसे परमेश्वर अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से अपने लोगों का मार्गदर्शन कर रहा है और वह जानकारी जो उसने हमें देने के लिए उन पर भरोसा किया था। ऐतिहासिक पुस्तकें भी यही करती हैं। यह कानून और गवाही को बार-बार दोहराना है।

परमेश्वर के लोगों के लिए कभी भी कोई बुलावा नहीं होता। आप क्यों नहीं जाकर प्रभु से पूछते कि वह आपसे क्या चाहता है? कभी नहीं। आप क्यों नहीं जाकर व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को पढ़ते हैं और देखते हैं कि वे आपको क्या करने के लिए कहते हैं? अब हम देखेंगे कि जब हम परमेश्वर की इच्छा के बारे में बात करते हैं तो क्रिया क्रियात्मक शब्द है।

बुद्धि साहित्य एक आकर्षक हिस्सा है, और हम इसके बारे में बाद में और बात करेंगे। इसलिए मैं यहाँ ज़्यादा समय नहीं बिताऊँगा, लेकिन कुछ पुस्तकों जैसे कि सभोपदेशक, नीतिवचन और बहुत से भजनों में बुद्धि साहित्य बुद्धि साहित्य है। हमारे पास न्यू टेस्टामेंट में भी बुद्धि साहित्य है, जैसे कि जेम्स की पुस्तक में।

यह आपको एक विश्वदृष्टि का उत्पाद देता है। वास्तव में, अगर मुझे सही से याद है, तो ज्ञान साहित्य वस्तुतः कभी भी टोरा को उद्धृत नहीं करता है, लेकिन यह टोरा के संदेश को लेता है और इसे इस तरह से अनुवादित करता है कि आप अभी जीवन कैसे जीते हैं, और यही हमारी ज़िम्मेदारी भी है। हम इसे प्रेरित तरीके से नहीं कर सकते हैं, लेकिन हमें अभी भी भगवान के वचन को लेना है और इसे इस तरह से अनुवादित करना है कि हम जीवन कैसे जीने जा रहे हैं।

फिर वहाँ भविष्यद्वक्ता लिखने वाले थे--यशायाह। मैं आपके लिए यशायाह 8, अध्याय 8 का यह अंश पढ़ता हूँ। यशायाह अध्याय 8। मैं इन्हें टैग कर सकता था, मुझे लगता है कि यहाँ बैठने से पहले, लेकिन आपको इसे देखने के लिए भी समय चाहिए।

और मैं चाहता हूँ कि आप इन सभी अंशों को अपने आप देखें और उन पर मनन करें कि मेरा प्रतिमान उन्हें आपके लिए कैसे प्रस्तुत करता है। यशायाह अध्याय 8, श्लोक 16, उन्हें बाँधो, गवाही, उन्हें बाँधो, तुम बाँधो, माफ़ करो, यह अमेरिकी मानक संस्करण है, 1901, पुरानी अंग्रेज़ी की तरह। गवाही को बाँधो, मेरे शिष्यों के बीच व्यवस्था को मुहरबंद करो।

यहाँ ध्यान किस बात पर है? ध्यान जानकारी प्राप्त करने पर नहीं है। ध्यान आपके पास मौजूद जानकारी को समझने पर है। और मैं उस प्रभु की प्रतीक्षा करूँगा जो याकूब के घराने से अपना मुख छिपाता है।

पद 19: आइए देखें कि मैं कितनी दूर जाना चाहता हूँ। दरअसल, पद 16, जैसा कि मैंने पहले ही पढ़ा है। और मैं उस प्रभु की प्रतीक्षा करूँगा जो याकूब के घराने से अपना मुख छिपाता है।

और मैं उसकी खोज करूँगा। देखो, मैं और वे बच्चे जिन्हें यहोवा ने मुझे दिया है, सिथ्योन में रहनेवाले सेनाओं के यहोवा की ओर से इस्राएल में चिन्ह और चमत्कार के लिए हैं। लेकिन यह सब गवाही पर आधारित है।

श्लोक 20 को देखिए। यह बहुत महत्वपूर्ण श्लोक है। इस पर प्रकाश डालिए।

यदि वे व्यवस्था और गवाही के अनुसार न बोलें, तो उनमें शोक नहीं है। यदि वे वचन के अनुसार न बोलें, तो उनमें कोई प्रकाश नहीं है। अब, कुछ लोग कहेंगे, ठीक है, आप परमेश्वर से पूछें कि वह आपसे क्या करवाना चाहता है।

और अगर यह बाइबल से सहमत नहीं है, तो आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। बाइबल ऐसा कभी नहीं कहती। बाइबल कहती है कि कानून और गवाही से शुरू करें, कानून से शुरू करें, और उस जानकारी से शुरू करें जो परमेश्वर ने हमें दी है कि हमें अपना जीवन कैसे जीना चाहिए।

यही पुराने नियम का पैटर्न है। और जब आप पुराने नियम की हर किताब को पढ़ते हैं तो यह आपके सामने होता है। अब, हमने उस मूल्य जमा स्लाइड के बारे में बात की।

मुझे बस एक पल के लिए वहाँ वापस जाना है। तो यह यहाँ है। न केवल आपके पास पवित्रशास्त्र का पाठ है, बल्कि वे कथाएँ आपको इस बारे में जानकारी देती हैं कि आपको कैसे जीना चाहिए।

लूत की तरह मत जियो। और अब्राहम एक आदर्श व्यक्ति नहीं है, लेकिन वह एक बेहतर आदर्श है। मूसा आदर्श नहीं था, लेकिन वह एक बेहतर आदर्श है।

क्यों? क्योंकि आखिरकार उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानी। उन्होंने परमेश्वर की शिक्षा का पालन किया। पूरी तरह से नहीं।

और क्या बाइबल इस मामले में अद्भुत नहीं है कि यह हमारे नायकों की जीत के साथ-साथ उनकी खामियों को भी दर्ज करती है? यह मूल्य जमा हमारे विश्वदृष्टिकोण का एक बड़ा हिस्सा बन जाता है क्योंकि यह प्रत्यक्ष नहीं, बल्कि निहित है। आप यह देखकर बहुत कुछ सीख सकते हैं कि कैसे लूत ने मूल्यों और ईश्वर के संचार का उल्लंघन किया, साथ ही पवित्रशास्त्र में कई अन्य व्यक्तियों, यहाँ तक कि बाद में दाऊद ने भी।

ठीक है, तो यहोशू 1 जिसे हमने अभी तक नहीं पढ़ा है, लेकिन मैं इसे नहीं पढ़ने जा रहा हूँ। मैं बस इसके बारे में आपसे बात करने जा रहा हूँ। यहोशू 1:6:6-8, और अध्याय 24 परमेश्वर के संचार और उस संचार से मूल्यों के विकास के इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं।

आपको वाकई इन पाठों को ध्यान से पढ़ने की ज़रूरत है। और यहाँ आप क्या देखेंगे। 1:6 से 8 में, मूसा की शिक्षा पर गौर करें।

मूसा के चले जाने के बाद यहोशू लोगों से यही कह रहा है। मूसा ने जो कहा वही करो। परमेश्वर ने मूसा के ज़रिए जो कहा वही करो।

मूसा की शिक्षा की पुस्तक को ध्यान से देखिए, जैसा कि वह इसे कहता है। इसमें लिखी गई सभी बातों का ईमानदारी से पालन कीजिए। यहोशू ने कभी नहीं कहा कि, जाकर पता लगाओ कि परमेश्वर अब क्या करना चाहता है।

समिति की बैठक करें, इत्यादि। नहीं, यह सब पवित्रशास्त्र से जुड़ा हुआ है। जोशुआ 24, मैं इसे रिहर्सल मोटिफ कहता हूँ।

वह पुस्तक के अंत में अभ्यास करता है। यह जोशुआ की पुस्तक, अध्याय 1, अध्याय 24 के अंतिम बिंदु हैं। बाइबल में अभ्यास का भाव बहुत बार आता है, जहाँ संचारक लोगों के प्रति परमेश्वर की भलाई का अभ्यास करता है।

आमतौर पर ऐसा ही होता है। कभी-कभी, निर्णय का पूर्वाभ्यास होता है। लेकिन कुल मिलाकर, यह वापस आता है और पूर्वाभ्यास करता है।

याद करो कि जब परमेश्वर तुम्हें मिस्र की भूमि से बाहर लाया था, तब वह तुम्हारे प्रति कितना दयालु था? तुम असफल हो गए। कभी-कभी वास्तव में इसका बहुत अधिक उल्लेख नहीं किया जाता है। यह कई बार उज्ज्वल बिंदुओं को देखता है।

यहोशू 24:25 में, यहोशू ने एक वाचा बनाई और उसे किसकी पुस्तक में दर्ज किया? ईश्वरीय निर्देश। इसलिए मुझे नहीं पता कि हमें इस पर कितनी बार ज़ोर देना होगा, लेकिन सच्चाई यह है कि ईश्वर का अनुसरण करने का मतलब है उनके वचन और उस वचन द्वारा विकसित विश्वदृष्टि और मूल्य जटिलता का अनुसरण करना। जैसे-जैसे समय बीतता है, रहस्योद्घाटन अधिक केंद्रित होता जाता है।

मुझे आपको यह दिखाना है। मैं पावरपॉइंट में बहुत अच्छा नहीं हूँ। आप इसे उस तरह से नहीं देख पाएँगे क्योंकि आप शायद पीडीएफ या कुछ और देख रहे होंगे, लेकिन मेरे पास यह हैंडआउट है।

जैसे-जैसे समय बीतता है, रहस्योद्घाटन और अधिक केंद्रित होता जाता है। पेंटाट्यूक इसका आधार है। और जब आप बाइबल, भजन, भविष्यवक्ताओं में आगे बढ़ते हैं, तो आप पेंटाट्यूक की प्रतिध्वनियाँ देखते और सुनते हैं, और यह सब यीशु में भी मौजूद है।

फिर, नया नियम पुराने नियम में जो हुआ था, उसे बहुत हद तक दोहराता है। एक तरह से सुसमाचार हमारी नींव है, हमारी पंचग्रन्थ। प्रेरितों के काम की पुस्तक विस्तार और चर्च के रहन-सहन के बारे में बात करती है।

पत्र कभी-कभी चर्च में चल रहे मुद्दों पर चर्चा करते हैं, और प्रेरित उन चीजों को सुलझाने की कोशिश करते हैं और लोगों को उनके मूल्यों और उनके विश्वदृष्टिकोण और व्यवहार पर वापस लाने की कोशिश करते हैं। इसलिए, मूल्य जमा विकास पवित्रशास्त्र की हमारी समझ का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। ठीक है, तो परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए पुराने नियम के पैटर्न।

जब आप पुराने नियम का अध्ययन करते हैं तो आपको कुछ गैर-स्वीकृत प्रावधान मिलते हैं जिनका उपयोग मूर्तिपूजकों द्वारा किया जाता है। यह एक दिलचस्प विषय है। क्षमा करें, मेरी आदत थोड़ी तेज़ी से आगे बढ़ने की है।

एआई अनुवादों के लिए यह कठिन हो सकता है। मुझे धीमे और अधिक स्पष्ट होने की आवश्यकता है। लेकिन एएनई भविष्यवाणी।

ANE का मतलब है प्राचीन निकट पूर्व भविष्यवाणी। इसका उल्लेख व्यवस्थाविवरण 18 में किया गया है। ब्रूस वाल्टके की पुस्तक में, उन्होंने इस बारे में बहुत कुछ बताया है।

यह आपके नोट्स में ग्रंथसूची में है। व्यवस्थाविवरण 18 में, हमारे पास सभी प्रकार की चीजें हैं। उन्होंने बुतपरस्त दुनिया में बहुत कुछ डाला।

खैर, उन्होंने यहूदी दुनिया में चिट्ठियाँ डालीं। बुतपरस्त दुनिया में चिट्ठियाँ डालना एक रहस्योद्घाटन वाली बात थी। इस्राएल की दुनिया में कई बार, ज़्यादातर समय, चिट्ठियाँ डालना एक ऐसा विकल्प था जिसे संप्रभु और इसलिए निष्पक्ष माना जाता था।

भूमि का बंटवारा चिट्ठी के द्वारा हुआ था। इसलिए, कोई यह नहीं कह सकता था कि, यहोशू, यह चुनाव तुमने किया है, परमेश्वर ने नहीं। नहीं, चुनाव में परमेश्वर की संप्रभुता है।

यह शास्त्र में भाग्य बताने का एक हिस्सा है। फिर हम ऑर्गन पढ़ते हैं। हम तीर चलाना सीखते हैं, और वे उसे पढ़ते हैं।

यह एक तरह से काउबॉय और भारतीय फिल्म देखने जैसा है। भारतीय, कई बार, औषधि पुरुष इस तरह की चीजें करते थे। लेकिन प्राचीन निकट पूर्व में, यह बहुत आम था।

बर्तन में पानी पढ़ना। ज्योतिष। भूत-प्रेत और अध्यात्मवादी भी थे, लेकिन बाइबल इसकी कड़ी निंदा करती है।

मैं इन्हें आपको पढ़कर नहीं सुनाऊंगा। आप इन्हें पढ़ सकते हैं, लेकिन लैव्यव्यवस्था 1 शमूएल में, जब शाऊल एन्डोर की जादूगरनी के जाल में फंस गया और हैरान रह गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे अपने अधीन कर लिया और शाऊल को उसकी सज़ा मिली, अगर आप चाहें तो, यह उसी से एक सुधार है। बाइबल लगातार, किसी भी तरह की भविष्यवाणी की पूरी तरह से निंदा करती है।

यह दुनिया का एक हिस्सा है। इसके अलावा, परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए पुराने नियम के पैटर्न का उपयोग किया जाता है। इसमें विशेष प्रावधान हैं।

जैसा कि मैंने आपको बताया, लेविटिकस और व्यवस्थाविवरण में बुतपरस्त भविष्यवाणी की पूरी तरह से निंदा की गई थी। इसके अलावा, पुराने नियम के समय में विशेष प्रावधान थे। पुराने नियम में स्वीकृत कुछ प्रथाएँ थीं जिनके बारे में कुछ लोग कह सकते हैं कि यह एक तरह की भविष्यवाणी है।

हम इसे ऐसा भी कह सकते हैं। लॉक कास्टिंग नामक भविष्यवाणी करने वाले साधन थे। और इसका उल्लेख अन्य स्थानों पर संख्याओं में किया गया है, यहाँ तक कि नए नियम में भी, जिसमें मथायस को एक प्रेरित के रूप में दर्शाया गया है।

यह चुनने में सक्षम होने और चुनाव में परमेश्वर की संप्रभुता पर भरोसा करने की एक प्रक्रिया थी। एक तरह की दिलचस्प बात। निर्गमन 28 में उरीम और समन एक बहुत ही अल्पकालिक वस्तु है जिसे परमेश्वर ने राष्ट्र के लिए मार्गदर्शन के लिए पुजारी को दिया था।

इसलिए, यह एक बहुत ही सीमित वस्तु थी क्योंकि परमेश्वर ने पुजारी को बाहर और भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर की आवाज़ के रूप में स्थानांतरित कर दिया था। यह गायब हो जाता है - एक संक्षिप्त इतिहास।

और नोट्स में, मैंने आपको इस बारे में कुछ जानकारी दी है। और मैंने आपको दो किताबें भी दी हैं जो अपेक्षाकृत अज्ञात हैं जब तक कि आप उरीम और समन के इस मुद्दे पर ग्रंथसूची खोजने में अच्छे न हों। कभी-कभी, कुछ लोग उरीम और समन कह सकते हैं क्योंकि मैं बी की तरह लग सकता हूँ। ठीक है।

सपने। सपने बड़े थे। नए नियम में यूसुफ के साथ भी ऐसा ही हुआ।

अब, आप कह सकते हैं, ठीक है, मेरे पास सपने हैं। भगवान सपनों के माध्यम से मुझसे संवाद करते हैं। आप मुक्ति इतिहास के विकास का हिस्सा नहीं हैं।

आप मुक्तिदायी इतिहास की उपज हैं। ये सपने भगवान द्वारा अपने लोगों के लिए बनाए गए हैं और ये मुख्यधारा में ज्यादा हैं। ये आकस्मिक नहीं हैं।

हम सभी के पास सपने होते हैं। जैसा कि बाइबल कहती है, सपने दिन भर के विचारों की व्यस्तता से आते हैं। यह दिलचस्प होने वाला है।

फ्रांज डेलिज़्च की एक अच्छी किताब है जिसका नाम है बाइबिल मनोविज्ञान। मुझे यह बात फिर से कहनी पड़ेगी क्योंकि मेरे नोट्स में यह नहीं है। फ्रांज डेलिज़्च, बाइबिल मनोविज्ञान।

यह एक पुरानी किताब है, लेकिन बाइबल और विश्वासियों के जीवन में सपनों के मुद्दे पर यह एक बहुत ही रोचक किताब है। चमत्कारी संकेत। हम इन्हें पुराने नियम में बहुत देखते हैं।

ये किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं बल्कि परमेश्वर के नेताओं और परमेश्वर के चुने हुए संचारकों द्वारा किए गए थे। न्यायाधीशों और शमूएल के संदर्भ में प्रारंभिक भविष्यद्वक्ताओं और वहाँ जो कुछ हो रहा था। फिर से, चुने हुए व्यक्ति।

यह कोई आम संपत्ति नहीं थी जिसका इस्तेमाल आप पुराने नियम के विश्वासी के रूप में कर सकते थे, लेकिन यह वह था जिसका इस्तेमाल परमेश्वर ने अपने वचन को संप्रेषित करने के लिए

चुनिंदा व्यक्तियों के माध्यम से किया था। हम प्राचीन निकट पूर्व और पुराने नियम में भविष्यवाणी की तुलना कर सकते हैं। प्राचीन निकट पूर्व में, कुछ कानून संहिताएँ राज करने वाले राजा से ली गई थीं।

हम्मुराबी और अन्य लोगों के पास कानून संहिताएँ हैं। कभी-कभी, वे पुराने नियम की तरह ही लगते हैं, लेकिन पुराने नियम में, परमेश्वर की कानून संहिताएँ उसका स्वयं का प्रकटीकरण थीं। वे एक रहस्योद्घाटन का हिस्सा हैं, न कि मानव विकास का हिस्सा।

इसके अलावा, प्राचीन निकट पूर्व में, भविष्यवाणी और जादू इस तथ्य के कारण प्रमुख थे कि उनके पास अपर्याप्त कोड थे, और इसलिए लोग लगातार अपने माध्यम से जानकारी मांगते रहते थे। अब, आप जानते हैं, हम ऐसा करने के लिए लुभाए जाते हैं। वास्तव में, मुझे लगता है कि अब भगवान से सीधे रहस्योद्घाटन की मांग और लालसा को प्रेरित करने वाली चीज यह है कि हम कोई गलती नहीं करना चाहते हैं।

यह एक अच्छी प्रेरणा है। लेकिन इसका दूसरा पहलू यह है कि हम मान लेते हैं कि परमेश्वर ने संवाद करने के लिए यही तरीका चुना है, और उसने उस संवाद को नहीं चुना है। पुराने नियम में भविष्यवाणी करना मामूली बात थी क्योंकि जीवन, व्यवस्था और गवाहियों को निर्देशित करने के लिए एक पर्याप्त संहिता मौजूद थी।

मूसा, यहोशू और भविष्यवक्ताओं ने कभी भी भविष्यवक्ता, बाइबिल के भविष्यवक्ता से कुछ नहीं कहा; उन्होंने व्यवस्था और गवाहियों से कहा। पुराने नियम में व्यक्ति परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए जिम्मेदार थे। उन्होंने इसे मौखिक रूप से सुना होगा।

मुझे यकीन है कि उनके पास हर समय शिक्षण के क्षण होते थे। हम उन्हें पाठ में प्रमुख शिक्षण क्षणों के रूप में देखते हैं, लेकिन वे अक्सर होते हैं। मुझे यकीन है कि मूसा और जोशुआ जैसे मुख्य नेताओं के अधीनस्थ थे जिन्होंने उन बातों को दोहराया।

नए नियम में, हमारे पास प्रेरित और भविष्यवक्ता हैं। भविष्यवक्ताओं ने प्रेरितों की शिक्षाओं को दोहराया, और इसलिए, परिणामस्वरूप, यह चल रहा है। प्राचीन निकट पूर्व में, सभी तरह के मुद्दों के लिए भविष्यवाणी की जाती थी।

पुराने नियम में, भविष्यवाणी मुख्यतः प्रमुख छुटकारे की घटनाओं के संबंध में थी, और उन घटनाओं के प्रमुख नेता इसे करते थे। तो पुराने नियम के ये पैटर्न काफी दिलचस्प हैं, है न? चलिए यहाँ आगे बढ़ते हैं। हम स्लाइड नंबर 13 पर जाते हैं।

मैं इसे जिज्ञासा का एक साइड नोट कहता हूँ, और इसका कुछ मुद्दों से संबंध है। विचार करने के लिए एक मुद्दा यह है कि कैसे भगवान ने पुजारी को अपने प्रतिनिधि के रूप में इस्तेमाल किया, लेकिन वह मुक्ति इतिहास में भविष्यवक्ताओं में बदल गया। पुजारी मूल वाहन थे, लेकिन वे असफल रहे।

वे भ्रष्ट हो गए। इसलिए परमेश्वर ने भविष्यवक्ता का पदभार संभाला, और भविष्यवक्ताओं ने कार्यभार संभाला। हम वास्तव में पुजारी को परमेश्वर के रहस्योद्घाटन, उसके दिव्य प्रकटीकरण के वाहक के रूप में नहीं पाते हैं।

उन्होंने उसकी इच्छा को पूरा किया, और संभवतः उन्होंने दस्तावेजों या मौखिक रूप से परमेश्वर की शिक्षा के ज्ञान से प्राप्त अन्य सभी लोगों की तरह बुरा किया। लेकिन सच्चाई यह है कि वे भविष्यवक्ताओं से काफी अलग हैं। भविष्यवक्ताओं को तत्काल प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन प्राप्त हुआ।

उन्होंने उपदेश देने वाले भविष्यवक्ताओं के काफी लंबे समय बाद भी लिखना जारी रखा, लेकिन लिखने वाले भविष्यवक्ताओं ने नहीं। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, उरीम और तुम्मीम का उपयोग पुरोहितों द्वारा किया जाता था, लेकिन यह संक्षिप्त था। केवल पुजारी ही इसका उपयोग करते थे।

जब परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं की ओर रुख किया, तो विवेक का वह साधन गायब हो गया। इसका कोई इतिहास नहीं है। यह बाइबिल के इतिहास का एक बहुत ही संक्षिप्त अंश है।

दिलचस्प बात है, लेकिन यह सिर्फ पुजारी से संबंधित थी। इस बारे में ज्यादा जानकारी के लिए मैंने आपको जो नोट्स दिए हैं, उनमें सेक्शन बी देखें। ठीक है, कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ।

चमत्कारी प्रक्रियाएँ विशेष थीं, मानक नहीं। मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है क्योंकि पुराने नियम में, वह एक ऐसा समय था जब परमेश्वर स्वयं को प्रकट कर रहा था; उसे ऐसा करना पड़ा क्योंकि रिकॉर्ड कम था। लेकिन चमत्कारी प्रक्रियाएँ तब भी विशेष थीं।

मानक नहीं। वह सिर्फ रेगिस्तान में जाकर परमेश्वर से संदेश नहीं लेता था। इसके अलावा, परमेश्वर के वचन और विशेष प्रकाशन के प्रति आज्ञाकारिता परमेश्वर के लोगों के लिए मानक थी।

अब, उनके पास हमारी तरह पहुँच नहीं थी। हम ईश्वर के प्रति अधिक जिम्मेदार हैं क्योंकि हमारे पास धर्मग्रंथों तक आसान पहुँच है। उनके पास उतनी पहुँच नहीं थी।

इसलिए उन्हें किसी ऐसे पादरी या भविष्यवक्ता से बात करनी थी जो वचन को जानता हो और उनसे उनकी स्थिति पर चर्चा करनी थी। और वह पादरी या भविष्यवक्ता परमेश्वर के वचन को लागू करेगा और उनकी मदद करेगा जैसे आज एक पादरी आपकी मदद कर सकता है। विशेष प्रक्रियाएँ व्यक्तिगत से ज्यादा राष्ट्रीय थीं।

पुराने नियम की प्रथाएँ अनिवार्य रूप से कायम नहीं रहतीं। बाइबल का एक मुद्दा है जिसमें विशेष प्रकाशन का मुद्दा है जो जमाराशि का अवमूल्यन करता है, और यह कुछ अंशों में चीजों का वर्णन करता है, और यह कुछ अंशों में चीजों को आदेश देता है। और हम इसका उल्लेख उस समय करेंगे जब आपको यह पूछना होगा कि क्या बाइबल वर्णनात्मक है या आदेश दे रही है। क्या वह आदेश अस्थायी और वर्णनात्मक है? तो, यह अस्थायी और वर्णनात्मक था।

वे पुराने नियम के साथ समाप्त हो गए, लेकिन वे पुराने नियम के दौरान निर्देशात्मक थे। आपको उनका पालन करना चाहिए था, लेकिन वे समाप्त हो गए, और हम आगे बढ़ गए। इसलिए ये वे चीजें हैं जिन्हें आपको बाइबिल की व्याख्या से तय करना है।

वर्णन क्या है, निर्देश क्या है, और यह कब तक निर्धारित किया जा रहा है? 10 आज्ञाएँ निर्देशात्मक हैं, और फिर भी सब्बाथ मुद्रा एक ऐसा मुद्रा है जिसके बारे में अधिकांश लोग सोचते हैं कि यह निश्चित समय-सीमा के भीतर वर्णनात्मक है, और फिर भी इसमें एक निर्देशात्मक हिस्सा है जिसे वे अलग-अलग तरीकों से अलग करते हैं। इसके अलावा, पुराने नियम की प्रथाएँ ज़रूरी नहीं कि हमेशा बनी रहें। आप जानते हैं, जहाँ तक मेरा सवाल है, आप अभी भी ताले का उपयोग कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, क्या आपने सोचा है कि अगर आपके चर्च में पाँच लोग हैं जो डीकन या एल्डर बनने के योग्य हैं, लेकिन आपके पास उनमें से सिर्फ़ दो ही हैं, तो आप लॉक का इस्तेमाल क्यों नहीं करते? आप उनके नाम एक टोपी पर लिख सकते हैं और किसी को नाम निकालने के लिए कह सकते हैं। अगर वे सभी समान रूप से योग्य हैं, तो इससे व्यक्तित्व संबंधी मुद्दों से बचा जा सकेगा। इससे कुछ लोगों को यह निर्णय लेने से रोका जा सकेगा कि इस श्रेणी के लिए कौन सबसे उपयुक्त है।

पुराने नियम में बहुतों ने यही किया था। प्रेरितों के काम की पुस्तक में भी यही हुआ था। सच कहूँ तो, मैंने एक बार एक पादरी को इस बारे में बात करते हुए सुना था।

शायद हमें चर्च में समान रूप से योग्य कुछ लोगों के चुनाव के लिए लॉटरी का उपयोग करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए। मुझे नहीं पता कि यह एक बुरा विचार है या नहीं। इसके अलावा, परमेश्वर का वचन, मौखिक या लिखित, विवेक में केंद्रीय था।

यह केंद्र में है। वे जो विश्वदृष्टि और जटिल मूल्य विकसित कर रहे थे, वे विवेक की कुंजी थे। एक बात जो स्पष्ट है वह यह है कि कोई व्यक्तिवाद मॉडल नहीं है।

मुझे लगता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका के चर्चों में व्यक्तिवाद इतना मजबूत है क्योंकि हमारा देश कठोर व्यक्तिवाद पर आधारित है। यह शुरू से ही सच था। कैनेडी युग ने उस बहुत मजबूत, कठोर व्यक्तिवाद को बनाया।

अमेरिकी लोग समुदाय से ज़्यादा व्यक्तिवादी हैं। चर्च भी इसी तरह के होते हैं। और इसलिए यह एक चुनौती है जिसका सामना हम सभी ईसाइयों को करना पड़ता है।

ये कुछ सारांश टिप्पणियाँ हैं। अब, अगली बात पुराने नियम में परमेश्वर की इच्छा के नामकरण की है। इच्छा शब्द का प्रयोग और परमेश्वर की इच्छा की श्रेणियाँ।

हमने अपने अवलोकन में इस शब्द का उल्लेख किया है। इस शब्द का अध्ययन अंग्रेजी संस्करणों द्वारा जटिल है। और मैं आपको एक क्षण में एक सातत्य चार्ट दूंगा।

रूढ़िवादी वाक्यांश, ईश्वर की इच्छा, जो ईसाई परिवेश में बहुत आम है, मुख्य रूप से एक नया नियम वाक्यांश है। उस वाक्यांश का वास्तव में उसी तरह से उपयोग नहीं किया जाता है। वही विचार वहाँ है।

परमेश्वर की इच्छा, परमेश्वर के उद्देश्य, इत्यादि। ये सभी परमेश्वर की इच्छा के कथन हैं। लेकिन यह इसे उसी तरह से व्यक्त नहीं करता।

सेप्टुआजेंट में भी कुछ जगहों को छोड़कर ऐसा नहीं है। यह मुख्य रूप से नए नियम का एक वाक्यांश है। रोमियों 2:17 और 18 को देखें।

मुझे लगता है कि यह आपके लिए एक महत्वपूर्ण पाठ है। रोमियों 2:17 और 18। यह एक ऐसा पाठ है जिसे यहाँ सबसे आगे आने की आवश्यकता है।

रोमियों 2:17 और 18. पौलुस इन शुरुआती अध्यायों में यहूदियों और अन्यजातियों के मुद्दों पर चर्चा करता है। यह 17 है।

लेकिन अगर तुम यहूदी कहलाते हो और कानून का विरोध करते हो, या कानून पर भरोसा करते हो। यहाँ फिर से वही पुरानी भाषा है। और तुम कानून और परमेश्वर की महिमा और महिमा पर भरोसा करते हो।

और उसकी इच्छा को जानो। और जो बातें सिखाई जाती हैं, उन्हें स्वीकार करो, किससे? व्यवस्था से। इन आयतों में व्यवस्था का दो बार ज़िक्र किया गया है।

कानून क्या है? कानून परमेश्वर की इच्छा है। और ऐसे कई पाठ हैं जो ऐसा करते हैं। हालाँकि, रोमियों 2 का पाठ एक महत्वपूर्ण पाठ है जिसे पौलुस इस्तेमाल कर रहा है और उसका वर्णन कर रहा है।

ईसाईयों के लिए परमेश्वर की इच्छा बाइबल है। यहूदियों के लिए परमेश्वर की इच्छा कानून है। और यह स्पष्ट रूप से कहा गया है।

एक भी वाक्य या शब्द धर्मशास्त्र नहीं बनाता। दूसरे शब्दों में, जब हम ईश्वर की इच्छा के बारे में बात करते हैं, तो हमारे पास सुसमाचारों में बहुत सारे पाठ नहीं होते। लेकिन हम यीशु के मॉडल को देखना चाहते हैं, है न? खैर, यह कथात्मक मॉडल का हिस्सा होगा, जैसा कि हमने उस सेटिंग में बात की थी जहाँ हम पवित्रशास्त्र और पवित्रशास्त्र के कथात्मक भागों से व्यवहार करने और जीने के तरीके के बारे में बात कर रहे हैं।

हमें प्रत्यक्ष प्रमाण पाठ की आवश्यकता नहीं है, लेकिन हमारे पास एक कहानी है। और यीशु हमें उनमें से बहुत कुछ देते हैं। इसलिए, हम सिर्फ एक शब्द या एक वाक्यांश लेकर उसे पवित्र नहीं बना सकते और बाकी सब को खारिज नहीं कर सकते।

इसमें और भी बहुत कुछ है। पुराने नियम में इच्छा शब्द का सातत्य। ठीक है? यह शब्द इच्छा से उद्देश्य तक जाता है।

इच्छा वह है जो परमेश्वर चाहता है। उसे प्रसन्न करो। जब तुम उसकी आज्ञा मानते हो तो वह तुमसे प्रसन्न होता है।

आप उसकी नज़र में अनुग्रह पाते हैं। और यह उद्देश्य की निरंतरता के दूसरे छोर पर जाता है, जहाँ परमेश्वर चुनता है। परमेश्वर प्रेम करना चुनता है।

परमेश्वर निर्धारित करता है। तो, आपको यह सातत्य मिलता है कि परमेश्वर क्या चाहता है से लेकर परमेश्वर क्या करेगा, इच्छा से लेकर उद्देश्य तक। और यह बात नए नियम में भी सत्य होने जा रही है।

उद्देश्य पक्ष पर, हम परमेश्वर की संप्रभुता के बारे में कुछ देखेंगे। इच्छा पक्ष पर, हम परमेश्वर की शिक्षा के प्रति हमारी आज्ञाकारिता को देखेंगे। ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं।

ग्रीक मुहावरा। यह दिलचस्प है। मैं यहाँ ज़्यादा समय नहीं बिताऊँगा।

लेकिन सेप्टुआजेंट की खोज में नए नियम की तरह ईश्वर की इच्छा के पैटर्न नहीं मिलते। यह ईश्वर की इच्छा, प्रसन्नता और उद्देश्य के पैटर्न का अनुसरण करता है। और यह सिर्फ भाषाविज्ञान है।

अर्थ एक ही है, लेकिन भाषाई अंतर है। लेकिन अजीब बात यह है कि दूसरे मंदिर के यहूदी साहित्य में, यह मलाकी से लेकर मृत सागर स्कॉल तक था। हमें ईसा के समय से पहले की उस अवधि में यह सब मिलता है।

बहुत सारा लेखन, आपके लिए जानना बहुत ज़रूरी लेखन। अजीब बात है कि द्वितीय मंदिर साहित्य में, यह वाक्यांश आता है: ईश्वर की इच्छा। अब, क्या यह ग्रीक प्रभाव के कारण है कि आप भाषाई कथन कैसे बनाते हैं? मुझे नहीं पता कि मैं इसका उत्तर दे सकता हूँ।

ओह, मैं आपको एक पल में एक स्लाइड दिखाऊँगा। याद रखें कि एक शब्द या एक वाक्यांश धर्मशास्त्र नहीं बनाता है। उदाहरण के लिए, सिराच, टोबिट, फर्स्ट मैकाबीज़ और सेकंड मैकाबीज़ में ईश्वर की संप्रभु इच्छा के बारे में बात की गई है।

आपको कुछ साहित्य पढ़ना चाहिए। यह बाइबल नहीं है, लेकिन यह यहूदी इतिहास है और यह महत्वपूर्ण है। नए नियम के विश्वासियों ने इनमें से कई पुस्तकों को महत्व दिया।

एक्लेसियास्टिकस, एक्लेसियास्टेस नहीं, बल्कि एक्लेसियास्टिक अस, जो बेन सिराच की बुद्धि है। प्रारंभिक चर्च ने इसे महत्व दिया। उन्होंने जोसेफस को भी महत्व दिया।

नैतिक इच्छा एज्रा, मैकाबीज़, सुलैमान की बुद्धि, सुलैमान के लिए स्तोत्रों में है। ये सभी द्वितीय मंदिर की पुस्तकें हैं जहाँ ये बातें सामने लाई गई हैं। जहाँ तक मैं पाता हूँ, व्यक्तिगत व्यक्तिवादी इच्छा के लिए कोई बाधा नहीं है।

मैं सेकंड टेम्पल का विशेषज्ञ नहीं हूँ, लेकिन मैंने अपनी विशेषज्ञता के साथ इस पर जितना संभव हो सका, उतना अध्ययन किया है। अब, पुराने नियम में ईश्वर की इच्छा का नामकरण। हमारे पास ईश्वर की इच्छा के लिए श्रेणियाँ हैं।

परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा। अब, मैं यहाँ आपको ये आयतें पढ़ना चाहूँगा, लेकिन मैं पहले से ही अपने समय पर हूँ। और यह होने जा रहा है, और यह पाठ थोड़ा लंबा चलेगा।

आप हमेशा रुक सकते हैं और शुरू कर सकते हैं। इसलिए मुझे इसे बनाना है, मैं चाहता हूँ कि यह निरंतर हो। मैं इसे OT1 और OT2 में विभाजित नहीं करना चाहता।

इसलिए, मैं इसे निरंतर बनाना चाहता हूँ। पुराने नियम में परमेश्वर की इच्छा का नामकरण। परमेश्वर की इच्छा की श्रेणियाँ।

भगवान के मानक संस्करण का अनुवाद कहता है, मैं जानता हूँ कि तुम सब कुछ कर सकते हो और कोई भी उद्देश्य, इच्छा शब्द है, कि तुम्हारा कोई भी उद्देश्य रोका नहीं जा सकता। भगवान के नियमों के बारे में सभी प्रकार के ग्रंथ हैं। बारिश की एक बूंद के गिरने से लेकर एक राज्य के पतन तक, भगवान नियंत्रण में हैं।

परमेश्वर की संप्रभुता पवित्रशास्त्र में बहुत मौजूद है। परमेश्वर की नैतिक इच्छा, स्पष्ट रूप से, परमेश्वर की नैतिक इच्छा बाइबल पर हावी है, जिस तरह से वह चाहता है कि हम जीएँ। और यह पुराने नियम और नए नियम दोनों से आता है।

हम इस समय केवल पुराने नियम को ही देख रहे हैं। हम थोड़ी देर में दानियेल के जीवन के बारे में बात करेंगे, ताकि यह देखा जा सके कि उसने अपनी परिस्थितियों में परमेश्वर की शिक्षा को किस तरह जिया। तो आपको प्रभुसत्ता की इच्छा मिली, आपको नैतिक इच्छा मिली।

वे पुराने और नए दोनों ही धर्मग्रंथों में परमेश्वर की इच्छा की श्रेणियों पर हावी हैं। मैंने बहुत खोजा है। मुझे कहीं भी ऐसा नहीं मिला जिसे मैं व्यक्तिगत इच्छा कह सकूँ जहाँ आप परमेश्वर के पास जाएँ और कहें, परमेश्वर, मुझे बताएँ कि मुझे क्या करना है।

क्या मुझे डॉक्टर बनना चाहिए? क्या मुझे वकील बनना चाहिए? क्या मुझे शिक्षक बनना चाहिए? शायद मुझे पादरी बनना चाहिए। शायद मुझे व्यवसायी बनना चाहिए। शायद मुझे गड्ढे खोदने चाहिए।

ये सभी दुनिया में जीविका चलाने और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए नेक काम हैं। लेकिन पवित्रशास्त्र में इसे समझने के लिए कोई व्यक्तिगत मॉडल नहीं है। आप यह समझ

सकते हैं कि आप कौन हैं और आप जो हैं उसे पूरा करने के लिए आप सबसे अच्छा क्या कर सकते हैं और इसे उस तरीके से करें जो बाइबिल की शिक्षा के अनुरूप हो।

हर किसी की अपनी इच्छा होती है। आपके पास पूरी बाइबल है। यह आपके लिए है।

यह आपके लिए नहीं है, बल्कि यह आपके लिए है। और आप इसी के अनुसार जीते हैं। यही श्रेणी है।

लेकिन एक व्यक्ति की इच्छा का मॉडल जिसे आपको समय से पहले पता लगाना होगा, और ध्यान से सुनना होगा, कि आपको निर्णय लेने के लिए समय से पहले पता लगाना होगा, मौजूद नहीं है। यह लोगों की कल्पना का मिथक है। यह बहुत से लोगों की सोच से मेल खाता है, कि वे ईश्वर को क्या चाहते हैं, लेकिन वे बाइबल के ढाँचे और ईश्वर ने हमसे संवाद करने के लिए जिस तरह से चुना है, उसे नहीं सुन रहे हैं।

दानियेल के मॉडल का पैटर्न। दानियेल एक बहुत ही दिलचस्प व्यक्ति है जो इस्राएल के इतिहास के अंत के करीब आता है जिसे हम अंतर-नियम अवधि कहते हैं। दानियेल का मॉडल।

दानियेल ने परमेश्वर के प्रकाशन पर अपनी निर्भरता को पहचाना। यहाँ फिर से, मैं आपको ये सभी अंश पढ़ सकता हूँ, लेकिन मुझे आपसे ऐसा करने के लिए कहना होगा। उसने इन स्लाइडों को पढ़ा, 20 से 23 तक पढ़ा, और देखा कि यह परमेश्वर के प्रकाशन पर उसकी निर्भरता को कैसे उजागर करता है।

वह निर्णय नहीं ले रहा था। वह परमेश्वर के रहस्योद्घाटन के बारे में जो कुछ भी जानता था, उसके आधार पर निर्णय ले रहा था कि कैसे जीना है। उसने अपने जीवन को परमेश्वर के मूल्यों, अपने प्रार्थना जीवन और परमेश्वर पर अपनी निर्भरता के इर्द-गिर्द व्यवस्थित किया, यहाँ तक कि प्रार्थना करने के लिए यरूशलेम की ओर अपनी खिड़कियाँ भी खोली।

यह सब उसने पुराने नियम में बताए गए अच्छे विश्वासी के जीवन को पूरा करने के लिए किया। उसने धैर्यपूर्वक परमेश्वर की संप्रभु इच्छा को आकर्षक तरीकों से पूरा होते देखा। दानियेल का जीवन उस अवधि के दौरान बेबीलोन के कई राजाओं के जीवन को दर्शाता है।

और यह बहुत ही रोचक है। एक बार तो वे भूल ही गए थे कि वह कौन है। और फिर उसे बुलाया गया, और फिर जब उसने दीवार पर लिखा तो भगवान ने चमत्कार किया, और भविष्यवक्ता उनके लिए इसे खोलने के लिए वहाँ मौजूद थे।

और इसलिए, परिणामस्वरूप, दानियेल परमेश्वर के वचन के अनुसार, परमेश्वर की शिक्षा के अनुसार, अपनी बुद्धि पर नहीं, बल्कि परमेश्वर की बुद्धि पर जीवन जीने का आदर्श प्रस्तुत करता है। ठीक है। अब, यह दानियेल है।

चलिए देखते हैं। दुर्व्यवहार किए गए पाठ के नमूने चुनें। और यहाँ मैं ऐसा करना पसंद करूँगा। मुझे शायद इस पर एक पूरा पाठ होना चाहिए, लेकिन मैं इतना ही कर सकता हूँ।

ठीक है। इसहाक के लिए एक दुल्हन। याद कीजिए जब अब्राहम ने उत्पत्ति 24 में अपने सेवक को बुलाया और कहा, मैं चाहता हूँ कि तुम हमारे लोगों में से एक दुल्हन इसहाक को वापस लाओ।

आप देखिए, प्राचीन निकट पूर्व में अपनी आनुवंशिक रेखाओं को एक साथ रखना बहुत, बहुत, बहुत महत्वपूर्ण था। और इसलिए वह अपने लोगों में से एक दुल्हन चाहता था। वह अपने नौकर को भेजता है, और उसका नौकर यह निर्देश लेकर जाता है कि उसे अपने लोगों में से एक दुल्हन लानी है।

कोई भी व्यक्ति नहीं, कोई भी व्यक्ति जो उसके साथ आता है। सेवक यह कथन कहता है जिसे बहुत से लोग इस्तेमाल करते हैं: भगवान ने मुझे जिस रास्ते पर चलने दिया, उसमें बाधा बनना। खैर, बाधा क्या थी? वैसे भी यह बाधा नहीं थी।

वह सही समय पर सही जगह पर सही परिवार और लड़कियों के लिए सही जगह पर था ताकि चुनाव किया जा सके। यह इतना आसान नहीं था, लेकिन फिर भी, इसहाक के लिए दुल्हन अब्राहम और उसके विलक्षण वंश के पुराने नियम में निर्धारित शर्तों के अनुसार की गई थी। गिदोन की ऊन, आप जानते हैं, गिदोन ने ऊन को बाहर रखा।

एक दिन, उसने कहा, हे प्रभु, इसे सूखा कर दो, और मैं तब विश्वास करूंगा जब बाकी सारी जमीन गीली हो जाएगी। उसने ऐसा नहीं किया, और उसे विश्वास नहीं हुआ। इसलिए उसने फिर से ऐसा किया, इसे गीला कर दिया और बाकी सारी जमीन को सूखा दिया।

भगवान गिदोन के साथ काफी धैर्यवान थे, लेकिन गिदोन का ऊन अविश्वास का प्रतीक है। यह उचित नहीं था, लेकिन भगवान ने गिदोन को समायोजित किया और खुद के बावजूद गिदोन के साथ धैर्य रखा। वह एक अच्छा मॉडल नहीं है।

इसलिए वहाँ मत जाओ। पुराने नियम में मार्गदर्शन शब्दावली: अपने पूरे दिल से प्रभु पर भरोसा करो, अपनी समझ से परे मत जाओ, अपने सभी तरीकों में, उसे स्वीकार करो, और वह तुम्हारे मार्गों का मार्गदर्शन करेगा। मैंने उस श्लोक को ईश्वर की इच्छा जानने के लिए एक व्यक्तिगत प्रतिमान के रूप में हजारों बार उद्धृत करते हुए सुना है।

नहीं, ऐसा नहीं है। पूरे दिल से प्रभु पर भरोसा मत करो, अपनी समझ पर निर्भर मत रहो। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है मूल्य जमा, कानून और भविष्यद्वक्ताओं का पालन करना।

इसका मतलब यह नहीं है कि आप खुद पर भरोसा नहीं कर सकते। इसलिए आपको कुछ खुलासा करना होगा। तो आप सही साबित होंगे।

यह वह बात नहीं है जिसके बारे में यह अंश लिखा गया है। अपने सभी कामों में उसे स्वीकार करें, और वह आपके मार्ग को निर्देशित करेगा। वह आपके मार्ग को कैसे निर्देशित करता है? यह भजन की तरह नहीं है। अपना हाथ उस आदमी के हाथ में रखो जो पानी पर चलता था।

बस इतना ही नहीं। लेकिन सच तो यह है कि आपको उसकी शिक्षा का पालन करना है। अपने सभी कामों में उसे स्वीकार करें, और वह आपके मार्ग को निर्देशित करेगा।

कैसे? धर्मग्रंथों के माध्यम से, उनकी शिक्षाओं के माध्यम से, और उन धर्मग्रंथों से निकलने वाले मूल्यों के माध्यम से। यह किसी भी तरह से व्यक्तिवाद का आह्वान नहीं है। आप उन अन्य ग्रंथों को भी पढ़ सकते हैं।

निष्कर्ष। पाठ का दुरुपयोग अक्सर उस पर आधारित होता है जिसे मैं नैतिकता, आध्यात्मिकता, या रूपक पाठ कहता हूँ ताकि आप उन्हें अपने दृष्टिकोण में रख सकें और महसूस कर सकें कि आपको ईश्वर की स्वीकृति मिल गई है। मैंने पादरी का काम किया; मुझे 1967 में नियुक्त किया गया था; जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, आप में से अधिकांश का जन्म हुआ था।

और मैंने यह देखा है और यह देखा है और यह देखा है। लोग अपने खुद के बनाए भगवान बनाते हैं और दावा करते हैं कि यह भगवान उन्हें कुछ बता रहा है। वे पाठ को आध्यात्मिक बना देते हैं।

वे बाइबल के शब्दों को संदर्भ से बाहर ले जाते हैं क्योंकि वे उस समय उनकी इच्छा के अनुरूप होते हैं। यह सही नहीं है। यह वह नहीं है जो परमेश्वर चाहता है।

और यह कभी-कभी काम भी कर सकता है। आपको लग सकता है कि यह काम करता है, लेकिन ऐसा नहीं है। मेरी किताब में एक दिलचस्प उदाहरण है, मैं आपको बताना चाहता हूँ। मेरी पत्नी एक आर्थोपेडिक, माफ़ कीजिए, नेत्र शल्य चिकित्सा केंद्र के लिए एक कंप्यूटर सिस्टम की योजना बना रही थी और उसे स्थापित कर रही थी।

अब, मेरी पत्नी को कंप्यूटर चलाना आता था, लेकिन उसे कंप्यूटर के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं पता था। वह बहुत डरी हुई थी। लेकिन डॉक्टरों ने उस पर भरोसा किया।

और उसने एक ऐसे व्यक्ति की जांच की जो आईबीएम और हेवलेट-पैकार्ड में था। और वह मिस्टर क्लीन था, उसके पास सभी उत्तर थे, उसके पास ऐसा सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर था जिसकी दुनिया प्रशंसा करती थी। फिर, जब उसने शोध किया, तो उसे एक और व्यक्ति मिला जिसके पास नेत्र विज्ञान के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया सॉफ्टवेयर पैकेज था।

इसलिए उसने उसे इंटरव्यू के लिए बुलाया। वह आ गया। ऐसा लग रहा है जैसे वह अभी-अभी सूटकेस से बाहर निकला हो।

उसका सूट पूरी तरह से झुर्रीदार था। वह NERD यानी NERD के रूप में एक विशिष्ट बेवकूफ था। अमेरिका में, इसका मतलब है एक ऐसा व्यक्ति जो प्रतिभाशाली है, और ऐसा लगता है कि वह अभी-अभी सूटकेस से बाहर निकला है।

वह उससे डरती थी, लेकिन उसने जो कुछ पेश किया वह बिल्कुल वही था जो वह चाहती थी। इसलिए वह घर गई, और उसने अपनी बाइबल ली। उसने उसे खोला, और जो आयत उसकी आँखों के सामने आई, उसमें लिखा था, मदद के लिए लेबनान जाओ।

अब ऐसा हुआ कि जो आदमी अभी-अभी सूटकेस से बाहर आया है, वह लेबनान, इंडियाना से है। यार, क्या वह उत्साहित हो गई? उसने मुझे फ़ोन किया।

मैं सेमिनरी में अपने कार्यालय में था, और उसने मुझे फ़ोन पर बुलाया और कहा, ठीक है, होशियार, तुम इस बारे में क्या सोचते हो? और मुझे अपनी कहानी बताओ। और मेरे पास उसे यह बताने का साहस नहीं था, उन लोगों के लिए दुःख है जो मदद के लिए लेबनान जाते हैं, मदद के लिए लेबनान नहीं जाते। जब उसने इसे खोला तो उसने उस संदर्भ को गलत तरीके से पढ़ा, जितना कि वह इसे गलत तरीके से लागू कर रही थी।

कभी-कभी, आपको बस चीजों को जाने देना होता है, खासकर जब यह आपकी पत्नी हो। अब, यह बहुत बढ़िया निकला, और हो सकता है कि भगवान के पास हास्य की भावना हो, लेकिन यह वह तरीका नहीं है जिससे भगवान हमें अपने जीवन को निर्देशित करना सिखाते हैं। बाइबल में बुद्धि को परिभाषित करना।

आप जानते हैं, मुझे खेद है, मुझे यहीं रुकना होगा और शुरू करना होगा क्योंकि इसमें थोड़ा ज़्यादा समय लगेगा, जितना मैं एक प्रस्तुति में दे सकता था या देना चाहिए था। मैं पहले ही अपनी घंटे की सीमा पार कर चुका हूँ। और इसलिए पाँचवाँ, बाइबल में बुद्धि को परिभाषित करना।

हम वापस आएंगे, और यह परमेश्वर की इच्छा जानने पर पुराने नियम की प्रस्तुति का दूसरा भाग होगा। इसलिए बने रहिए, और आपको पता चल जाएगा कि बाद में कहाँ आना है। जब हम आएंगे तो मैं आपको इसमें ले जाऊँगा।

और हम अपना अगला सत्र इसी विशेष खंड पर बिताएंगे।